R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 26वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 26 | अंक 17 | रविवार, इलाहाबाद, 20 सितंबर 2026 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

❖ संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

उमेश श्रीवास्तव
संपादक

हर कविता में भाव तुम्हारे सुंदर हैं,
भावों के अवगुंठन में समुंदर है।
जहां भी देखो दूर तलक सच्चाई है,
इसीलिए हर कविता में गहराई है।

तो बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की। स्त्री मन के भावों से लबरेज कविताओं की। देश के प्रति सुंदर रचनाएं और भाई के प्रति अनुराग भरी बातों का गुच्छा है यह विशेषांक। हिंदी साहित्य के इतिहास में यह सुनहरे अक्षरों से अंकित होगा, कि देश की आजादी और भाई-बहन का प्रेम अपने आप में असीम होता है। जिसको शब्दों के माध्यम से तो कतई नहीं कहा जा सकता। कुछ कविताओं की बानगी देखिए -

पहली बानगी

आजाद देश भारत महका कभी तो होगा,
कुर्बान जान देकर सजदा कभी तो होगा।
लहरा दिया तिरंगा भारत की चोटियों पर,
ऊंचे गगन में भारत, अपना कभी तो होगा।

दूसरी बानगी

भाई एक सुकून है,
जो कंधा है सहारा है ।
ज़िंदगी जो दरिया है,
तो भाई एक किनारा है ।।

तीसरी बानगी

आह ! एक माँ कितना
कैद हुई जब कारागार मे,
बिलखती एक माँ की ममता।
बलिदानो की जंजीरो से,
घायल हुई तब उसकी क्षमता।

इस बार महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की पुरस्कृत रचना जबल पुर की अनुराधा गर्ग दीप्ति की 'नमन योग्य विकसित भारत है'। विशेषांक कैसा लगा, प्रतिक्रिया जरुर दीजिएगा।

अंत में

जो तुम कहो वही ठीक है,
जो तुम सुनो वही अच्छा है।
सरमाये इस दुनिया में,
एक मन ही है जो बच्चा है।

उमेश श्रीवास्तव

❖ कविताएं

अफ़रोज़ अज़ीज़

भारत की पहचान

धर्म एकता संप्रभुता सब, भारत की पहचान है।
बना हिमालय जिसका प्रहरी,मेरा देश महान है।।
करते हम नमन ..करते हम नमन ...करते हम नमन

जहाँ सवेरे शंखनाद हो, पूजन जप तप आरती।
दान पुण्य कर हर्षित मानव,गर्वित दिखती भारती ।।
जहाँ नदी गिरि पूजे जाते, रज रज में भगवान है ।
धर्म एकता संप्रभुता सब, भारत की पहचान है ।।

रही धरा यह बलिदानों की , भरा पड़ा इतिहास है।
नाम सहस्त्रों अंकित इसमें, कण कण घुली सुवास है ।।
जन्मभूमि खातिर सेनानी, हँस कर देते जान है।
धर्म एकता संप्रभुता सब, भारत की पहचान हैं ।।

जहाँ तिरंगा बतलाता है, सुख समृद्धिमय शान्ति हो।
चक्र एकता सिखलाता है,नव तकनीकी क्रान्ति हो।
राम कृष्ण ईसा की धरती, संस्कृति पर अभिमान है।
धर्म एकता संप्रभुता सब, भारत की पहचान है ।।

अंतरिक्ष में भारत पहुँचा, छेद किया पाताल में ।
गूढ़ रहस्यों को जाना है, करे प्रगति हर हाल में ।।
उच्च भाल उन्नत भारत का, ऊँची इसकी शान है।
धर्म एकता संप्रभुता सब, भारत की पहचान है ।।

डॉ. सीमा वर्णिका
कानपुर

अनुवादित अंतर्ध्वनि गीत संग्रह से

मान दो इज्जत बढ़ाओ जश्ने आजादी के दिन
कुछ शहीदी गीत गाओ जश्ने आजादी के दिन

सरहदों पर जां लुटाती सैनिकों की टोलियां
उन घरों के काम आओ जश्ने आजादी के दिन

देश की पहचान है अपना तिरंगा विश्व में
और भी ऊंचा उड़ाओ जश्ने आजादी के दिन

कर चले सैनिक निछावर मां पिता परिवार घर
हर मदद उनको दिलाओ जश्ने आजादी के दिन

चूड़ियां टूटी हैं उनकी धुल गए सिन्दूर भी
शोक दुख उनका मिटाओ जश्ने आजादी के दिन

वीर की अर्धांगिनी असहाय बच्चे भी यतीम
हर हुनर उनको सिखाओ जश्ने आजादी के दिन

हो तिरंगा ही क़फ़न अरमान हर सैनिक का इक
याद कर आंसू बहाओ जश्ने आजादी के दिन

देश है थाती शहीदों की सदा ये याद रख
फ़र्ज़ कुछ तुम भी निभाओ जश्ने आजादी के दिन

मनोरमा श्रीवास्तव 'मनोरम'

देश भक्ति ग़ज़ल

वतन की खाक को माथे से हम लगाते हैं।
इसकी मिट्टी से जीवन हम सजाते हैं।।

तिरंगा जब फलक पे नज़र आता है।
किस्मत पे अपनी हम इतराते हैं।।

ना कोई हिन्दू ना मुसलमान यहाँ।
हम एक हैं यही दुनियां को बताते हैं।।

नफरतों के अँधरे मिटा कर दिलों से सभी।
मोहब्बतों के दीप हम जलाते हैं।।

जो इस देश की खातिर लुटा गए सब कुछ।
उन्ही के नाम पर सर अपना झुकते हैं।।

वतन की आन रहे शान रहे मान रहे।
यही दुआ लबों पे हम सजाते हैं।।

अज़ीज़ ये ही अरमान है ज़िंदगी का मेरी।
वतन के नाम पे सब कुछ हम लुटाते हैं।।

माँ भारता

'जय - जय -जय माँ भारती करते तुझे नमन'

जय - जय- जय माँ भारती करते तुझे नमन,
वन्दे मातरम् कह भारतीय हर्षित होते मन।

झण्डा ऊँचा रहे हमारा जब तक है आकाश,
तना रहेगा गर्व से सीना मन में यह विश्वास।
मर जाएंगे मिट जाएंगे रखेंगे झण्डे की लाज,
मरते मरते भी गाएंगे राष्ट्र गान जन-गण -मन।

उबल रहा है लहू रगों में हम आर्यों की संतान,

पुरस्कृत कविता

नमन योग्य विकसित है भारत

नमन योग्य विकसित है भारत।
इसकी है मजबूत इमारत।
भारत माँ की करते आरत।
प्रीत-रीत की लिखें इबारत।।

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई।
आपस में है भाई-भाई।
अलग-अलग बोली है सबकी।
राष्ट्र भाष हो हिन्दी अबकी।।

विश्व शांति की राह चुनी है।
आक्रामकता नहीं गुनी है।
जग का ये सिरमौर बना है।
विश्वगुरु सा भाल तना है।।

रामरुप में प्रकटी ज्वाला।
जागा हिन्दू भगवा वाला।
सनातनी सदगुण की थाती।
ईद दिवाली साथ मनाती।।

आत्मशक्ति का निश्चय ठाना।
स्वालंबन के बल को जाना।
एक नया इतिहास बनाया।
जग को गौरव गान सुनाया।।

अनुराधा गर्ग दीप्ति,
जबलपुर

❖ कविताएं

बोल रहा इतिहास हमारा माँ तेरे सपूत महान।
राम- कृष्ण की पावन भूमि ,नारी का सम्मान,
सुभाष -पटेल पर करते भारतीय अभिमान।

सांसों में है स्पंदन, माँ पर आंच नहीं आने देंगे,
तेरी रक्षा की खातिर जान की बाजी लगा देंगे।
दुश्मन यदि माँ भारती पर बुरी नज़र डालेगा,
हंसते - हंसते कर देंगे हम प्राणों का बलिदान

गंगा की पावन धारा.,नदियों का संगम प्यारा ,
कश्मीर में केसर महके दक्षिण में संदल न्यारा।
भारत सोने की चिड़िया कण-कण स्वर्ण भरा,
नदियों में अमृत बहता प्रकृति सम्पदा पूर्ण धरा।

आशा जाकड़ ,
इन्दौर

गजल

आजाद देश भारत महका कभी तो होगा,
कुर्बान जान देकर सजदा कभी तो होगा।

लहरा दिया तिरंगा भारत की चोटियों पर,
ऊंचे गगन में भारत, अपना कभी तो होगा।

देखो तो घात में है बैठे ये दुश्मनों पर,
प्रहरी बना सिपाही निकला कभी तो होगा।।

भारत के जांबाज़ों की साहस है तपस्या भी,
चरणों में सर झुका हो, सबका कभी तो होगा।

मशहूर करके भारत वीरों ने नाम अपना,
करते हैं नाम रोशन चमका कभी तो होगा।

सरहद पे छोड़ आए अरमान सारे दिल के,
भारत की शान ऊंची दमका कभी तो होगा।

आंगन में छोड़े मंजू ममता भरा वो आंचल,
भारत के जांबाजों का सपना कभी तो होगा।

मंजू लता नागेश
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

नमन योग्य विकसित है भारत

नमन योग्य विकसित है भारत। इसकी है मजबूत इमारत।
भारत माँ की करते आरत । प्रीत-रीत की लिखें इबारत।।

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई। आपस में है भाई-भाई।
अलग-अलग बोली है सबकी। राष्ट्र भाष हो हिन्दी अबकी।।

विश्व शांति की राह चुनी है। आक्रामकता नहीं गुनी है।
जग का ये सिरमौर बना है। विश्वगुरु सा भाल तना है।।

रामरुप में प्रकटी ज्वाला। जागा हिन्दू भगवा वाला।
सनातनी सदगुण की थाती। ईद दिवाली साथ मनाती।।

आत्मशक्ति का निश्चय ठाना। स्वालंबन के बल को जाना।
एक नया इतिहास बनाया। जग को गौरव गान सुनाया।।

अनुराधा गर्ग दीप्ति,
जबलपुर

देश भक्ति कविता

देश भक्ति कविता
हम सब भारतवासी हैं

हम सब भारतवासी हैं
भारत माता की संतान।
ऋषि मुनियों की यह धरती
जहाँ जन्म लिये अनेक सुर वीर महान।

पर्वत झरने सागर नदियां जहां तीर्थ है अनेक और बहती
गंगा की निर्मल धारा। विजयी विश्व तिरंगा प्यारा झंडा
ऊंचा रहे हमारा का धरती गगन में गूंजे नारा।
पावन वेद पुराण जहां है
और निर्मल गीता का है ज्ञान।

धरती उगले सोना जहां
मेरे देश की माटी है चंदन।
जहां जन्म लेने के लिए
(इस भारत भूमि में जन्म लेने के लिए देवता भी लालायित रहते है)
करते हैं भारत भूमि को वंदन।
देश प्रेम से भरा हो हृदय हमारा
अपनी संस्कृति सभ्यता और राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे का सदा करें सम्मान।

सोने की चिड़िया मेरे भारत पर
पड़ी अंग्रेजों की बुरी नजर।
देश को गुलाम बनाया फूट डालो और राज करो कि नीति अपना कर।
चालाकी और छल से आए भारत में
करने को व्यापार।
दो सौ साल तक करते रहे राज हम पर
करते रहे जुल्म और अत्याचार।
देश की दुर्दशा के जिम्मेदार
वो देशद्रोही वह कुछ गद्दार जिन्होंने बेचे
अंग्रेजों के पास अपना धर्म और ईमान।

गुलामी की जंजीर में जकड़ कर
सहते रहे अत्यंत पीर।
भारत माता के नैनो से बहता नीर
और देश की दुर्दशा देखकर देश के वीरों का हृदय हो रहा था अधीर।
लेकिन देश को आजाद कराना
किसी केले के लिए नहीं था आसान
स्वतंत्रता सेनानियों को आजादी का जज्बा और दिल में था तूफान।

महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर पूरे देश को एकजुट किया
भगत सिंह ने अपने साहस और बलिदान से देश के युवाओं में देशभक्ति की भावना जगाई।
नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज का नेतृत्व करते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध नेतृत्व किया।
लाल बहादुर शास्त्री बाल गंगाधर तिलक मंगल पांडे गुरु गोविंद सिंह आदि।
भारत को आजादी किसी एक व्यक्ति के प्रयासों से नहीं मिली बल्कि इसके पीछे अनेक महान स्वतंत्रता सेनानियों का संघर्ष त्याग और है बलिदान।

जाति धर्म के नाम पर क्यों इतनी हिंसा और है तकरार।
देश को खोखला करते हैं; गुमराह करते हैं
कुछ गद्दार खड़ी करते हैं आपस में नफरत की दीवार।
चंद पैसों के लिए अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए कभी मत बेचो
कभी मत भूलो अपना गौरव अपना स्वाभिमान।
जय हिन्द जय भारत

रेणुका पटेल
भिलाई छत्तीसगढ़

बातें हैं बहकी बहकी

प्रेम अनोखा सावन का सब, बातें हैं बहकी बहकी।
शिव का पूजन अर्चन वंदन, खुशियाँ उर में चहकी।।

चलते चलते मंदिर सखियाँ , गीत सुरीले कजरी के।
सभी भक्त बोले पूजन कर, जय-जय बम- बम लहरी के।।
कृपा सदा करना गौरी शिव, जीवन बगिया नित महकी।
प्रेम अनोखा सावन का सब, बातें हैं बहकी बहकी।।

हरा भरा है उपवन सारा, हरियाली सब ओर रही।
रहे एक आशा मन में नित, प्रभु दर्शन दो राह सही।।
सखियाँ झूला झूले उपवन, बूँदें पड़ती है कनकी।
प्रेम अनोखा सावन का सब, बातें हैं बहकी बहकी।।

धरती ने राखी भेजी अब, चंदा मामा को अपने।
मामा ने सावन भेजा हैं, पूर्ण हुए सबके सपने।।
मामा सुंदर चमके नभ में, प्यारी धरती नित दमकी।
प्रेम अनोखा सावन का सब, बातें हैं बहकी बहकी।।

उमा मिश्रा प्रीति

सुंदर रूप निखार : हरियाली

वर्षा की बूंदे सुखद, जीवन का आधार ।
हरियाली फैली रहे, सुंदर रूप निखार ।।

ताल तलैया भर गए, दिखता ओर न छोर ।
झूम-झूम कर नाचता, मन मयूर चहुँ ओर ।।
सावन की परिकल्पना, चलो करें साकार ।
हरियाली फैली रहे, सुंदर रूप निखार ।।

बागों में झूले पड़े, बारिश हो घनघोर ।
चंचल मन पर न चले, कभी किसी का जोर।।
सपनों को मिलने लगा, एक नया आकार ।
हरियाली फैली रहे , सुंदर रूप निखार।।

हरी हरी सी चूड़ियाँ, कजरी वाले राग ।
बहन बेटियाँ आ गयीं, प्रकृति सजाए बाग ।।
इनके बिन लगता सदा , जीवन ये बेकार ।
हरियाली फैली रहे, सुंदर रूप निखार ।।

हर किसान खुशहाल हो, ऐसा होवे देश ।
आओ मिलकर हम रचें, एक सुखद परिवेश।।
वर्षा बिन होता नहीं, धरती का शृंगार ।
हरियाली फैली रहे, सुंदर रूप निखार ।।

छाया सक्सेना ' प्रभु '
जबलपुर(म.प्र.)

प्यारा बंधन रक्षा बंधन

राखी का पावन त्योहार,
बंधा प्रीत के बंधन में।
भाई-बहन का सच्चा प्यार,
अनमोल है सारे ही जग में?

राखी, रोली और मिठाई,
सभी सजाई थाली में।
भाई से ले बहना वादा,
सदा ही आना राखी में।।

बहना को भूल ना जाना,
सजा कर रखना हृदय में।
राखी का पर्व निभाना भैया,
हर साल आना राखी में।।

भाई हाथ जब बांधूँ राखी
अद्भुत खुशी झलकती है।
प्रेम के मोती चुनना भैया,
बहिना फरियाद करती है।

हम भाई-बहन का प्यार,
यूँ ही बना रहे जीवन में।
एक दूजे के दुःख बाँटें हम,
जो भी हों हमारे पथ में!

कभी भूल मत जाना भैया,
अपनी बहना को जीवन में।
सदा प्यार लुटाते रहना भैया,
अपनी बहना के आँगन में?

हे राखी !का पावन त्योहार।
भाई -बहन का निर्मल प्यार!!

सुषमा सिंह उर्मि
कानपुर

श्रावण मास की बधाई

श्रावण की सबको बधाई,
देखों री सखियों काली घटाएं छाई।
मस्त मस्त चले पुरवाई,
देखो री बरखा झूम नाचे लगी भाई।

पेड़ भी सूखे और पौधें भी कुम्हलाए,
ताल,तलैया नदी धरा सूख जाए
बरखा रानी सबको नहलाईं धुलाईं।
देखो री सखियों --

शिव जी भी आयें गौरा भी आयीं
राघव जी के संग- संग सिया जी भी आयीं
पेंग मार मार झूला तेज झुलाई।
देखो री सखियों ----

कान्हा जी भी आयें और श्रीजी भी आयीं
ग्वाल-बाल संग गोपिन भी आयीं
पेंग मार मार झूला उंचे ले जाई।
देखो री सखियों --

श्री विष्णु जी भी आयें और मां लक्ष्मी जी भी आयीं
बैकुंठ धाम में श्रावण मास बिताई
पेंग मार मार झूला तेज झुलाई।
देखो री सखियों ---

महादेव सती/ पार्वती जी संग हिमालय पर्वत आये
राजा दक्ष घर श्रावण मास बिताई
पेंग मार मार झूला जोर जोर झुलाई।
देखो री सखियों --

बहन बेटियां और सखियां अपने पीहर आयीं
सब मिलकर हंसी खुशी श्रावण मास बिताई,
बहन-बेटियां, सखियां सबका प्यार/आशीष पायीं।
देखो री सखियों ------

रेशम की डोर भाई की कलाई पर बांधीं
भाई की उम्र लम्बी बढाई,
हर पल की यादें दिल में बसाई।
देखो री सखियों ----

सावन की सबको बधाई,
देखो री सखियों काली घटाएं छाई।
मस्त मस्त चले पुरवाई,
देखो री बरखा रानी झूम नाचे लगी भाई।

साधना खरे
हर्षवर्धन नगर मीरापुर
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

मत्त सवैया

सारी खुशियाँ संग बटोरे,
ढेर उमंगें साथ है लाई
पावन दिन पर हर्षित होके,
राखी लेकर बहना आई,
रोली,अक्षत, रेशम डोरी,
प्यार भरी सौगातें लेकर।
उज्जवल कामना बहन करे ,
रेशम डोरी हाथ बांध कर।।
संग अपने हर एक बहना,
देख खुशी अपार है लाई ।
पावन दिन पर हर्षित होके,
राखी लेकर बहना आई।।

भाई, बहन के पावन रिश्ते,
सा दूजा ना होगा कोई।
भाई को गर दर्द होए तो,
आँखों से बहना भी रोई।।
प्यार बसा कर दिल में बहना,
ढेरों आशीष साथ लाई।
पावन दिन पर हर्षित होके,
राखी लेकर बहना आई।।

श्रद्धा श्रीवास्तव, कानपुर

राखी

रेशम के धागे में बँधा,
भाई-बहन का प्यार,
राखी लेकर आई बहना,
खुशियों की बौछार।

बचपन की वे मीठी यादें,
आँगन की मुस्कान,
रूठना-मनाना साथ-साथ,
रिश्ते की पहचान।

भैया के माथे रोली सजे,
बहना बाँधे राखी,
सुख-दुख में संग रहने की,
दे दोनों मन से साखी।

न धन चाहिए, न कोई उपहार,
बस स्नेह रहे अपार,
हर जन्म मिले ऐसा भाई,
हर जन्म मिले बहन का प्यार।

रिश्तों में यूँ ही मिठास रहे,
मन में रहे विश्वास,
राखी का यह पावन पर्व,
बनाए प्रेम का प्रकाश!!

अनीता दुबे

गाँव की गोरी

कटि कलश धरे, पग पैजनियां,
मुख में मुस्कान, अधर दमके।
सर केश घने ज्यों मेघ घिरे,
चंचल नयना मिनल मटके।।

सुचि हांसी मोहत है, मन को
है रक्त अधर ज्यों फूल झरे।।
मधु कामिनी बेल सी छाए रही,
श्वेताभ दंत, मोती सी लगे।
मुख शरद चन्द्र, अनुपम सुन्दर,
वाणी में मानो सहद घुले।।
मुख चंद्र किरण सी दमक रही,
माथे सिंदूरी, सूर्य सजे।।

मधु चाल चले, पायल झनके
मृदु स्वर झंकार सुनाए रही।।
वनिता सौंदर्य कहा बरनौ,
हिय स्नेह तरंग उठाए रही।।

कुंडल झलके, ज्यों अग्नि शिखा,
नथनी मणीहार,अलौकिक है।
कटि गागर से जल छलक रही,
जल में ज्यों मीन, किलोलत है।।

नव वनिता स्वप्न सजाए रही
साजन हिय स्नेह बढ़ाए रही।।
दोउ नैन पिया के बाट तकें,,
बूंदें सावन की लुगाई रही।।

डा शोभा त्रिपाठी शैव्या
छत्तीसगढ़

इश्क़ की आहट

देखकर जो झुका ले वो अपनी नज़र,
फिर छुपाने लगे दिल की हर एक खबर।
बिन कहे बात आँखों से होने लगे,
जान लो, दिल पे होने लगा है असर।

जिसकी आहट से धड़कन मचलने लगे,
जिसकी यादों में मन रोज़ ढलने लगे।
नाम सुनते ही चेहरे पे आए हँसी,
समझो, दिल में कोई दीप जलने लगे।

❖ कविताएं

जिसकी खुशियों में अपनी खुशी मिल गई,
जिसकी बातों में दुनिया नई मिल गई।
बिन बुलाए जिसे याद करने लगे,
जान लो, प्रेम की रुत नई खिल गई।

दिल की धड़कन जिसे अपना कहने लगे,
दूर रहकर भी जो पास रहने लगे।
जब दुआओं में उसका ही नाम आए,
समझो, चाहत ने दिल में जगह पा ली है।

सुनीता गुप्ता
कानपुर

मेरा प्यारा अच्छा भाई

भाई एक सुकून है, जो कंधा है सहारा है ।
ज़िंदगी जो दरिया है, तो भाई एक किनारा है ।।
ज़ब ज़िंदगी की दौड़ में, महसूस थकावट होती है ।
तब भाई के साथ में, खुशियों की मिलावट होती है ।।
बाकी है जो आसमां, तो भाई एक सितारा है ।
ज़िंदगी जो दरिया है, तो भाई एक किनारा है।।
आपके ही हौसलों में, जीत मेरी निहित है ।
लड़ जाऊँ मैं सकल जहां से, ज़ब तक साथ तुम्हारा है ।।
ज़िंदगी जो दरिया है, तो भाई एक किनारा है ।।
भाई एक सुकून है, जो कंधा है सहारा है ।
ज़िंदगी जो दरिया है, तो भाई एक किनारा है ।।
भाई एक किनारा है,,,,

प्रतिमा दीवान
धमतरी (छत्तीसगढ़)

वासुदेवाय नमः

हुए श्याम अभिभूत, इसलिए नारायण से नाता है। गुण
गाथा का कर बखान, कवि पारायण ही गाता है ।।
अनुरंजन मन अनुभव करता, जन-जन तू ही भ्राता है।
तात आपका दर्शन पावन, कण-कण का सुख दाता है ।।

हे बुद्धिमान, हे शौर्यवान, हे दिव्य देववर वर महान। हे
कर्मवान, हे धैर्यवान, हे शिक्षापति अप्रतिम प्रान ।।

कर पूर्ण हमारी अभिलाषा, हे वासुदेव अवितव्यमान है भाव
समर्पित नमन करे. कवि करता है नित आह्वान ।।

असहाय हुआ है जब मानव, भगवान तुम्हें ही पूजा है।
कहता है जग आकुलमय हो, तेरे समान नहिं दूजा है।।

नदिया के पार नाव होती, श्रीमान् तुम्हारी उर्जा है। है
सफल तुम्हारा समर श्याम, बलवान कंस पर गर्जा है।।

उद्धार यहीं पर है मेरा, मैं और कहाँ पर जाऊँ। उपकार करो
तुम कुछ ऐसा, मैं द्वार तुम्हारे आऊँ।'

होकर उदार कर दो करुणा, मैं बार-बार मुस्काऊँ। इस
पार पड़ी मैं रोऊँ क्यों, उस पार कहो तो आऊँ ।।

पूनम पांडे

रक्षा बंधन

रेशम की डोर है, रिश्तों का जोर है।
राखी का बंधन भैय्या, कितना पुरजोर है।

राखी बहना है लाई, भाई को दी पहनाई।
ये उसका प्यार है, सच्चा व्यवहार है।
भाई बहना का कितना सुन्दर परिवार है।
अक्षत की थाली लेकर,आई खुशहाली लेकर।
दीपक जलाकर बैठी, आरती की थाली लेकर।
ममता का मोल है, बंधन अनमोल है।
भाई के माथे चंदन,करता सत्कार है।
खिलते चेहरे पर देखो, कितना अपनापन है।
ये रिश्ता कितना पावन कितना सुहावन है।
बंधन में प्यार है, खुशियां अपार है।
भाई की कलाई सजती,दुआ का भंडार है।

संतोष मिश्रा दामिनी
प्रयागराज

कान्हा आया है

सूनी-सूनी राहों में फिर,
मधुर राग छाया है,
मन के आँगन खुशियाँ लेकर,
मेरा कान्हा आया है।

मुरली की मीठी तान सुनाकर,
हर पीड़ा हरने आया है,
रूठे मन को प्रेम सिखाने,
श्याम सलोना आया है।

जहाँ द्वेष की धूप पड़ी थी,
वहाँ प्रेम की छाया है,
टूटे रिश्तों को जोड़ने फिर,
माधव आज आया है।

अधरों पर मुस्कान सजाकर,
नयनों में विश्वास लिए,
अंधियारे जीवन-पथ पर वह,
आशा का प्रकाश लिए।

कंस रूपी अहंकारों से,
धरती को बचाने आया है,
सत्य-धर्म की राह दिखाने,
गीता का संदेश लाया है।

जब-जब मन घबराता है,
जब विश्वास डगमगाता है,
कान्हा बनकर कोई भीतर,
हौसला जगाता है।

प्रेम जहाँ सच्चा होता है,
वहीं श्याम मुस्काता है,
जिस हृदय में भक्ति बसी हो,
वहीं कान्हा आ जाता है।

न धन माँगूँ, न यश माँगूँ,
बस इतना वरदान मिले,
हर जन्म में चरणों में तेरे,
मुझको थोड़ा स्थान मिले।

मन के सारे संशय हर ले,
ऐसा दीप जलाया है,
प्रेम, सत्य और धर्म लिए,
मेरा कान्हा आया है।

राधे-राधे नाम रहे और,
श्याम हृदय में बस जाए,
जिस दिन कान्हा भीतर जागे,
जीवन वृंदावन बन जाए।

कान्हा आया रे

आह ! एक माँ कितना
कैद हुई जब कारागार मे,
बिलखती एक माँ की ममता।
बलिदानो की जंजीरो से,
घायल हुई तब उसकी क्षमता।
नैन बने आँसू के प्याले,
सिसकी ओठो के निवाले।
पीड़ाऐ शय्या पर सोती,
आह ! एक माँ कितना सहती ?

एक ब्रह्मरुप एक शक्तिरुप से,
गोदी भरती अब हरिरुप से।
घायल ममता को देकर छाया,
कृष्णरुप मे अब वह आया ।
टूट गये फिर सारे ताले,
खुलते स्वंय सारे दरवाजे।
भेजा लालन, अब यशोदा पलती,
आह ! एक माँ कितना सहती ?

वह जगकर्ता वह जग भर्ता,
लीला कर सारे दुख हरता।
रास रचा कर कुँज गलियों मे,
उपजा प्रेम सखा कलियो मे।
माखन चोर बाँसुरी सुर से,
सुधबुध खोती राधे धुन से।
रोज उलाहना यशोदा सुनती,
आह ! एक माँ कितना सहती ?

आमंत्रण पाकर मथुरा का,
वृँदावन त्यागा प्यारा सा।
व्याकुल होते गोपी सारे,
यमुना ,वृक्ष ,धरा भी सारे।
प्रेम के अतुलित रूप मे खोया,
अब श्याम बिना वृँदावन रोया।
यशोदा दुख से व्याकुल होती,
आह ! एक माँ कितना सहती ?

कँस का मथुरा मे सँहार,
वासु देवकी किया प्रणाम।
यशोदा नँदन ,देवकी सुत,
मथुरा का तेजस्वी नृप ।
महाभारत का यह रंगमंच,
कृष्ण भूमिका नायक बन।
कौरव पाँडू द्वन्दो को कहती,
आह ! एक माँ कितना सहती ?

बढ़ चली संघर्षो की गाथा,
तीर द्रोपदी पर ही साधा।
हुआ द्रोपदी चीर हरण,
प्रभु के वह आई शरण।
भरी सभा मे नारी मर्यादा,
कृष्ण चीर बढ़ाते ज्यादा।
कितनी पीढ़ा कुन्ती को होती,
आह ! एक माँ कितना सहती ?

हुआ महाभारत का प्रारंभ,
कौरव पाँडु का युद्ध आरंम।
युद्ध भूमि मे जब सब पहुँचे,
अर्जुन,पितामह गुरु से सकुचे।
सारथी बन कृष्ण ने किया प्रवेश,
गीता का तब देते वह उपदेश।
गँधारी सौ पुत्रो को खोती,
आह ! एक माँ कितना सहती ?

महाभारत का यह सँग्राम,
करता नव युग का निर्माण।
वीरो के रक्तो से रँजित,
दिशाऐ चीत्कार से गुँजित।
कितने ही वंशो का नाश,
मूर्छित गिरते निकलते प्राण।
धरती बलिदानो से रँगती,
आह ! एक माँ कितना सहती ?

तड़पती जब थी माँ की ममता,
देवकी गर्भ से जन्मा ललना।
कंस अभिमान पर करके घात,
युग बदला जिसके सौ हाथ।
वह युगकर्ता ,वह दुखहर्ता,
वह ब्रहमरुप,वह शक्तिरुप।
उस अंक पालने मे झूला,
आह !जिसकी माँ इतना सहती।

रचना सक्सेना
प्रयागराज

सुनीता गुप्ता
कानपुर

मेरा महबूब अदाओं से छला करता है

मेरा महबूब अदाओं से छला करता है
कर के फरियाद सितारों से गिला करता है

बात करती हैं निगाहों से निगाहें उसकी
कुछ भी कहना हो इशारों में कहा करता है

तिश्नगी दीद की हर पल है तरसती आंखें
कैसे देखें वो हिजाबों में मिला करता है

दिल की खुशरंग फ़ज़ा में है महकता चन्दन
मेरा महबूब बहारों में मिला करता है

हाथ हाथों में लिए साथ क़दम चलते हैं
फूल उल्फ़त का नज़ारों में खिला करता है

मेरे दिलदार तुझे ढूंढ रही है धड़कन
कश्मकश दिल में फ़रियाद गिला करता है

सिलसिला प्यार का अब टूट गया है रब्बा
कोई अहसास भी मुँहजोर गिला करता है

करके शिकवा मुझे महसूस कराता हरदम
तल्ख लहजों से बदन दिल का छिला करता है

राज़दां है या कि ग़मख़्वार कोई दुनिया में
हो जो अपना कोई हर ज़ख़्म सिला करता है

मनोरमा श्रीवास्तव 'मनोरम'

कान्हा आया रे

गाओ री सखि सब मंगल गाओ री सखि।
कान्हा आया रे प्यारा कान्हा गाओ री सखि।।

रात अँधियारी मथुरा काल-कोठरी कारी।
देवकी की गोदी कान्हा करन लागे किलकारी।।
मोदित भई माँ गोदी पालनहार देख कर।
स्वेद बिन्दु झरे-झरे बाबा वासुदेव माथे पर।।

कान्हा को धर टोकरी चले बाबा यमुना तीर को।
चरण पखारे यमुना कान्हा लखत नीर को।।
पहुँचे जो बाबा गोकुल रैना ठहरी देर तक।
कान्हा को रख जसुदा घर कन्या लाए फेर कर।।

कान्हा विरह में बेसुध माता देवकी रोवे।
कन्या को निरखे जब-जब उर को चैन तब होवे।।
यशुदा के घर-आँगन में बाजे बधाई है।
हर्षित हैं सब नर-नारी जन्मा कन्हाई है।।

डॉ0(कु0)शशि जायसवाल,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

खुद में झांक लें

रास्ते से भटका हुआ राही सा दीख रहा है ,
अपना सा होकर भी क्या सखा हो नहीं सकता ।

लड़खड़ा कर चलते हुए बीमार सा लगता है ,
मन का संतुलन खोकर भी बंजारा हो नहीं सकता ।

संसार की बुराई कर खुद ही दोषी बन बैठा ,
दार्शनिक विचार रख मन से हारा हो नहीं सकता।

ध्यान लगाए बैठा जो ईश्वर में तल्लीन है ,
पूजा-पाठ न कर भी बेसहारा हो नहीं सकता ।

हृदय हिलोरे लेता पर आंखे शांत दिखती है ,
बिना किसी की राह तके मौन से गुजारा हो नहीं सकता।

पक्षियों संग वह बैठ मीठे गीत गुनगुनाता है ,
भँवरे संग फूलों सा क्या नजारा हो नहीं सकता ।

जाने पहचाने चेहरे को याद करने की कोशिश है,
इतना अपनत्व देकर क्यूं हमारा हो नहीं सकता।

उसकी मुस्कुराहट ने मन को सुकून दिया है ,
मेरी छाया बन अब क्या ऐसा नजारा हो नहीं सकता।

कदमों से कदम मिला निशानी बन ही जाता है ,
कदमों तले मेरे प्रतिबिंब सा दूसरा सहारा हो नहीं सकता ।

सरिता कपूर, गाजियाबाद

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -91 98378 94997
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -91 78696 43222
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-91 94151 69522
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,-91 70935 29183
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,-91 99934 42579
गोरखपुर ब्यूरो - सरिता सिंह - 96282 04228
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, -91 96439 68797
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, - 91 94355 15469
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851
चंडीगढ़ टव्हई सिटी - प्रभजोत कौर -91 76969 19159
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-91 97549 69496
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -91 98630 29640
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-91 70003 39148
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-91 78694 58122
कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -91 94256 52547
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-91 93004 31143
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी, -91 6386 869 055
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन- 91 96787 72219
बिजनौर ब्यूरो - त्र-तुबाला रस्तोगी,-91 98971 11416
धमतरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -91 6265 018 551
बैगलुरु ब्यूरो - अंजू भारती -91 84709 77659
गोडा ब्यूरो - सरिता कपूर -91 73768 96768
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -91 83170 45106
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -91 85060 60468
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -91 70708 00416
लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --91 97933 18465
मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -91 93007 55500
भीलवाड़ा इकाई - डॉ राजमति पोखराना 81046 39622

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
संजय सक्सेना
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

❖ गद्य

सवालों के घेरे मे

'बिट्टू, कितने दिन से तैयारी कर रहे हो?'

माँ की आवाज में चिंता थी, लेकिन बिट्टू ने मोबाइल से नजरें हटाए बिना कहा, 'बस माँ, तैयारी चल रही है।'

पिता ने अखबार मोड़कर उसकी ओर देखा।

'तैयारी चल रही है? यह तैयारी है या समय काटने का नया तरीका?'

बिट्टू चुप रहा।

माँ फिर शुरू हो गईं, 'पढ़ाई करते हो या नहीं? दिन-रात मोबाइल में लगे रहते हो। कभी खाते हो, कभी सोते हो। देखकर लगता ही नहीं कि तुम किसी परीक्षा की तैयारी कर रहे हो।'

बिट्टू ने मोबाइल मेज पर रख दिया। 'आप लोग हर समय सवाल ही करते रहते हैं।'

पिता हँसे, 'सवाल न करें तो क्या करें? कितने सालों से तुम्हें दिल्ली भेज रखा है। खर्चा अलग, उम्मीदें अलग और परिणामष्ठ?'

बात अधूरी रह गई।

बिट्टू ने नजरें झुका लीं।

दिल्ली गए उसे चार साल हो चुके थे। शुरुआत में वह बड़े उत्साह से गया था। प्रतियोगी परीक्षा पास करके सरकारी नौकरी पाने का सपना था। माता-पिता ने गाँव की थोड़ी-सी जमीन गिरवी रख दी थी। माँ ने अपने गहने बेच दिए थे। पिता ने कहा था, 'बेटा, बस तू मन लगाकर पढ़। हमें तुझसे कुछ नहीं चाहिए।'

बिट्टू ने भी वादा किया था–'इस बार जरूर सफल होकर लौटूँगा।'

लेकिन 'इस बार' कब 'अगली बार' में बदल गया, उसे खुद पता नहीं चला।

हर साल परीक्षा आती, फार्म भरता, कुछ महीने तैयारी करता और फिर परिणाम के दिन कोई नया बहाना तैयार रहता।

कभी पेपर कठिन था, कभी प्रश्नपत्र गलत था, कभी आरक्षण ने रास्ता रोक दिया, कभी परीक्षा व्यवस्था दोषी थी।

इस बार भी परिणाम आने वाला था।

पिता ने पूछा, 'तुमने इस बार कितने घंटे पढ़ाई की?'

'पता नहीं।'

'कितने टेस्ट दिए?'

'याद नहीं।'

'कितनी किताबें पूरी कीं?'

बिट्टू झुंझला गया, 'आपको मुझ पर विश्वास ही नहीं है।'

पिता कुछ देर उसे देखते रहे।

'विश्वास है बेटा, तभी तो चार साल से तुम्हारे हर बहाने पर विश्वास करते आए हैं।'

कमरे में सन्नाटा छा गया।

माँ ने बात सँभालते हुए कहा, 'तुम्हारे दोस्त भी तो तैयारी कर रहे हैं। शर्मा जी का बेटा पिछले साल लग गया। वर्मा जी की बेटी भी नौकरी में आ गई। तुम कब तक तैयारी करते रहोगे?'

बिट्टू ने धीमे स्वर में कहा, 'हर किसी की अपनी क्षमता होती है।'

पिता बोले, 'सही कहा। मगर क्षमता के साथ मेहनत भी चाहिए।'

बिट्टू उठकर कमरे से बाहर चला गया।

उस रात उसने देर तक मोबाइल चलाया।

सोशल मीडिया पर सफलता की कहानियाँ देखता रहा।

किसी ने लिखा था–'मेहनत कभी बेकार नहीं जाती।'

किसी ने लिखा–'हार मत मानो।'

उसने पोस्ट पर 'वाह' लिख दिया और मोबाइल बंद कर दिया।

अगली सुबह पिता ने उससे कहा, 'बिट्टू, आज मेरे साथ बाजार चलो।'

दोनों पैदल निकल पड़े।

रास्ते में पिता ने पूछा, 'तुम्हें याद है, दिल्ली भेजते समय मैंने क्या कहा था?'

'क्या?'

'कि नौकरी करना जरूरी नहीं, अपने पैरों पर खड़ा होना जरूरी है।'

बिट्टू चुप रहा।

पिता बोले, 'हमें नौकरी की चिंता से ज्यादा तुम्हारी आदतों की चिंता है। तुम परीक्षा में असफल नहीं हो रहे, तुम प्रयास करने से बच रहे हो।'

बिट्टू ने पहली बार पिता की आँखों में सीधे देखा।

'तो क्या करूँ?'

'सच का सामना करो।

अगर पढ़ना है तो पूरी ईमानदारी से पढ़ो।

नहीं पढ़ना तो कोई काम करो। छोटा काम करने में शर्म नहीं, मगर माता-पिता के पैसे पर वर्षों तक सपने बेचते रहना शर्म की बात है।'

बिट्टू के पास कोई जवाब नहीं था।

कुछ दिनों बाद परीक्षा का परिणाम आया।

बिट्टू फिर असफल था।

माँ ने परिणाम देखा और चुपचाप मोबाइल रख दिया।

इस बार किसी ने उससे सवाल नहीं किया।

न कोई डाँट, न ताना, न तुलना।

यह खामोशी ही उसके लिए सबसे बड़ा सवाल बन गई।

वह देर तक अपने कमरे में बैठा रहा। मेज पर किताबें खुली थीं, मगर कई महीनों से उनके पन्ने वैसे ही थे।

उसने एक-एक करके किताबें उठाईं। कुछ पर धूल जमी थी।

उसे अचानक याद आया–पिता की गिरवी जमीन, माँ के बिके गहने, हर महीने भेजे गए पैसे और उनके चेहरे पर छिपी उम्मीद।

अगले दिन उसने पिता से कहा, 'पिताजी, मैं दिल्ली नहीं लौटूँगा।'

पिता ने आश्चर्य से पूछा, 'फिर?'

'काम करूँगा। साथ में पढ़ाई भी। लेकिन अब आपके पैसे पर नहीं।'

पिता ने कुछ नहीं कहा। बस उसके कंधे पर हाथ रख दिया।

माँ की आँखें भर आईं।

कुछ महीनों बाद बिट्टू ने एक छोटी-सी नौकरी शुरू कर दी। सुबह काम, शाम पढ़ाई। अब उसके पास मोबाइल कम और किताबें ज्यादा थीं।

एक दिन पड़ोसी ने पिता से पूछा, 'बिट्टू की नौकरी ल ग गई?'

पिता मुस्कराए, 'हाँ।'

'सरकारी?'

'नहीं।'

पड़ोसी के चेहरे पर हल्की निराशा दिखाई दी।

'अच्छाष्ठ तो फिर कैसी नौकरी?'

पिता ने कहा, 'ईमानदारी की।'

पड़ोसी कुछ समझा नहीं।

पिता ने आगे कहा, 'जिस दिन मेरा बेटा अपने पैरों पर खड़ा होना सीख गया, उसी दिन उसकी सबसे बड़ी नौकरी लग गई।'

बिट्टू अंदर खड़ा सब सुन रहा था।

उसने मुस्कराकर किताब खोली।

अब उसके सामने परीक्षा का प्रश्नपत्र नहीं था।

सवालों का असली घेरा उसके भीतर था–और इस बार उसे हर सवाल का जवाब खुद देना था।

उमा मिश्रा 'प्रीति '

सड़क पर खड़ा युवा और सवालों के घेरे में व्यवस्था

सड़क पर खड़ा युवा और सवालों के घेरे में व्यवस्था

सड़क पर खड़ा युवा आज केवल एक बेरोज़गार युवक नहीं, बल्कि देश की आकांक्षाओं और आशंकाओं का प्रतिबिंब है। उसकी आँखों में स्वप्न हैं, हाथों में योग्यता है, पर भविष्य के मार्ग में अनिश्चितता की धुंध है। शिक्षा पूरी करने के बाद भी रोजगार के लिए वर्षों प्रतीक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं की अनिश्चितता और बढ़ती महँगाई उसके धैर्य की परीक्षा ले रही है।

वह व्यवस्था से पूछता है–यदि परिश्रम और प्रतिभा के बाद भी अवसर सुनिश्चित नहीं, तो मेरे भविष्य की दिशा कौन तय करेगा? क्या नियुक्तियाँ समयबद्ध और पारदर्शी नहीं होनी चाहिए? क्या गाँव और छोटे नगरों के युवाओं को भी समान अवसर नहीं मिलना चाहिए?

निश्चय ही प्रत्येक समस्या का उत्तर केवल व्यवस्था को दोष देना नहीं है। देश में नए अवसर, तकनीकी विकास और उद्यमिता के अनेक मार्ग खुले हैं। फिर भी उस युवा की व्यथा को अनदेखा नहीं किया जा सकता, जो अवसर के अभाव में अपनी ऊर्जा और प्रतिभा को निष्फल होते देख रहा है।

युवा राष्ट्र की अमूल्य शक्ति है। उसे आश्वासन नहीं, अवसर; सहानुभूति नहीं, सम्मान; और प्रतीक्षा नहीं, पारदर्शी व्यवस्था चाहिए।

सड़क पर खड़ा यह युवा वास्तव में प्रश्न नहीं, देश के भविष्य की दस्तक है। आवश्यकता है कि व्यवस्था उसके प्रश्नों को सुने, आत्ममंथन करे और ऐसा परिवेश निर्मित करे जहाँ उसकी योग्यता ही उसके भविष्य का सबसे सशक्त आधार बने।

ड13/09, 6:32 र्ईं: शहरों में जल भरावः बारिश दोषी या बदहाल जल-निकासी व्यवस्था?

शहरों में जल भराव के लिए बारिश कतई दोषी नहीं है। क्योंकि बारिश तो सिर्फ और सिर्फ एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, जो विशेषतया वायु के जलवाष्प शीतल पदार्थों के संपर्क में आने से संघनन (म्दहीूँदह) के कारण काफी ठंडा हो जाता है। तब वह जल वाष्प पानी की बूंदों अथवा ओलों के रूप में आसमान से धरती पर वर्षा बनकर बरसते हैं,और उस क्षेत्र के मौसम को प्रभावित करते है।

पर बारिश होने के बाद जो बारिश का पानी, बदहाल जल निकासी व्यवस्था की वजह से, नालियों में जल भराव की समस्या हो जाती है, और नालियों का गंदा पानी सड़कों पर भरता जाता है। कभी-कभी तो सड़कें इतनी भर जाती हैं कि नालियों का गंदा पानी आम घरों में घुसने लगता है और घर की व्यवस्था चौपट होने लगती है, घर के समान-असबाब बारिश के पानी में बहने लगते हैं और नष्ट होने लगते हैं...।

अगर जल निकासी की व्यवस्था सही हो तो वर्षा का जल तुरंत समय पर निकलता जाता है, और इस प्रकार जल भराव के मुसीबत से छुटकारा भी पा सकते हैं...।

शुभा भौमिक

बिलासपुर (छ.ग.)

बदलता मौसम और बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं

मौसम का परिवर्तन निरंतर बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं पूरे विश्व के हर देश के लिए एक गंभीर खतरा बन चुकी है जंगलों की कटाई, प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान बढ़ रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं। कभी जबरदस्त सूखा, कभी भीषण बारिश तो कभी अचानक बादल फटने और कभी विकराल चक्रवाती तूफानों की घटनाएं सामने आ रही है।

भीषण गर्मी समुद्र का तापमान बढ़ा रही जिससे बारिश का कोई महिना निश्चित नहीं रह गया है। कारखानों और गाड़ियों से निकलने वाला धुआं हवा को दूषित कर रहा है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई से बंधी हुई मिट्टी भीषण बारिश से होने वाली बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा को नहीं रोक पा रही है।

थोड़े समय में अत्यधिक वर्षा से गांव और नगर डूब जाते हैं। ड्रेनेज सिस्टम खऱाब होने से शहर और गांव की सड़कें नदी और तालाब का रूप ले लेती हैं। लोगों के आवागमन के लिए प्रशासन को कभी कभी नावों की व्यवस्था करनी पड़ती है। कभी कभी लम्बे समय तक बारिश न होने से सूखा पड़ जाता है, धरती चिटक जाती है, फसलें सूख जाती यहां तक कि वनों में आग लग जाती है। समुद्र का पानी जब बहुत गर्म हो जाता है तब तूफान और भी शक्तिशाली हो जाता है। पहाड़ों पर पर्यटन को ध्यान में रखते हुए अंधाधुंध निर्माण पहाड़ो पर दबाव डालते हैं और जब भारी बारिश होती है तब भूस्खलन की घटनाएं तेजी से बढ़ती है।

कार्बन-डाई-ऑक्साइड को सोखने और वातावरण को शुद्ध और ठंडा रखने के लिए आक्सीजन और फलदार पौधारोपण अभियान में हम सबको मिलकर बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। केवल सरकार ही सब कुछ करें यह सोच सभी प्राणियों के लिए बहुत घातक है। किसी भी तरह के भवन निर्माण में वर्षा जल संरक्षण के लिए वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को यथा संभव अवश्य अपनाया जाए विशेष रूप से बहुमंजिला भवनों और शापिंग मॉल में। पहाड़ी क्षेत्रों, नदी और समुद्र के किनारे रहने वाल `लोगों को किसी भी तरह के खत़रे से बचने हेतु मौसम विभाग की चेतावनी को बिलकुल भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। कारखानों और गाड़ियों में फिल्टर सिस्टम को मजबूत करना चाहिए ताकि दूषित धुंआ हवा में न मिल `। इलेक्ट्रिक, सौर ऊर्जा और सीएनजी चालित वाहनों के अधिकाधिक उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

साधना खरे

हर्षवर्धन नगर मीरापुर

प्रयागराज उत्तर प्रदेश